मोदी जी की संकल्पना : स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

डॉ० ज्योति सिंह
सहायक आचार्या
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत
सं० सूत्र - 7206536258
Email:- jyotisinghnik195@gmail.com

सारांश -

'मोदी जी की संकल्पना : स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' इस आलेख में सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के माध्यम से इनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है । इस सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से जिस सामाजिक ताने-बाने को बुना गया है उस पर चर्चा हुई है। इसमें एक तरफ सरदार पटेल के दृढ़ निर्णयात्मक क्षमता की बात की गई है तो दूसरी ओर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के दृढ़ संकल्प व त्वरित गति से कार्य संपादन की क्षमता पर लेखनी चली है।

प्रस्तावना -

इक्कतीस अक्टूबर दो हजार पच्चीस को सरदार वल्लभ भाई पटेल की डेढ़ सौवीं जयन्ति बहुत ही धूम - धाम से केवड़िया सहित पूरे भारतवर्ष में मनाई गई। इस क्रम में 'मोदी जी की संकल्पना : स्टैच्यू ऑफ यूनिटी ' नामक आलेख में सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रति अपनी सद्भावनाएँ प्रकट करते हुए नई पीढ़ियों के समक्ष लौह पुरुष के अनुकरणीय चरित्र को उजागर करना प्रथम उद्देश्य रहेगा। दूसरा प्रमुख मन्तव्य सरदार जी के डेढ़ सौवीं जन्म दिवस की भव्य तैयारी करने वाले गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदीजी की बात की जाएगी, जिन्होंने सन् दो हजार दस में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का शिलान्यास किया था और वर्तमान में प्रधान सेवक के रुप में उसका लोकार्पण सन् दो हजार अठ्ठारह में किया। अतः उनकी संकल्पनाओं की यात्रा पर भी चर्चा की जाएगी।

मूल विषय

एक भारत श्रेष्ठ भारत का सपना सरदार वल्लभ भाई पटेल ने देखा था और जिसे अपने जीवन काल में लगभग पूरा भी किया। उनका मानना था कि 'सामूहिक प्रयास से हम अपने देश को नई ऊँचाईयों तक ले जा सकते हैं जबकि एकता की कमी हमें नई विपत्तियों के सामने ला खड़ा करेगी।'

यही कारण है कि सामूहिक प्रयास के इस सूत्र के मंत्र को हम सरदार वल्लभ भाई पटेल के बाल्यकाल से लेकर उनके जीवन के अन्तिम श्वास तक देख सकते हैं। उनके बचपन की एक बहुत ही प्रचलित कथा स्मरण हो रही है। एक समय की बात है कि जब तत्कालीन विद्यालयी शिक्षकगण सरदार व उनके सहपाठियों को अपने यहाँ से ही पुस्तकें खरीदने के लिए बाध्य कर रहे थे तो सरदार ने सभी विद्यार्थियों को संगठित करके विरोध व धरना प्रदर्शन किया। अंत में इनके सत्याग्रह से परेशान होकर शिक्षकगण झुक जाते हैं और इनकी माँगे मान लेते हैं। इसी प्रकार की अनेकों कहानियाँ जन -मानस में प्रचलित है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल पर तत्कालीन राजनीतिक - आन्दोलन वह चाहे सशस्त्रात्मक हो या असहयोगात्मक हो का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था ।

अतः मोहन दास करमचंद गाँधीजी की नीतियों से प्रभावित होकर ही सरदार पटेल राजनीति में आये और उन्होंने खेड़ा सत्याग्रह, बारडोली सत्याग्रह, नमक सत्याग्रह, बोरसाडी सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन इत्यादि में बहुत ही सक्रियता से भाग लिया। लेकिन दूसरी ओर वे बाल गंगाधर तिलक, विनायक दामोदर सावरकर , भगत सिंह , राज गुरु , सुखदेव , नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन से भी प्रभावित थे। पीछे नहीं हटे । उन्हें तिलक जी व वीर सावरकर जी की नीतियाँ भी बहुत प्रभावकारी लगती थी। इसी कारण उन्होंने पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस की प्रतीक्षा न करके तथा कथित आजादी मिलने से पहले ही उन्होंने वी. पी. मेमन के साथ मिलकर भारतवर्ष के पाँच सौ पैंसठ रियासतों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आजादी के बाद उपप्रधान मंत्री व गृह मंत्री के रुप में हैदराबाद, जूनागढ़, जामनगर इत्यादि रियासतों का विलय भारतवर्ष में करवा दिया। पाँच सौ पैंसठ रियासतों के एकीकरण के मध्य में भले ही सुरक्षा नीति, विदेश नीति, संचार व्यवस्था की नीति रही हो लेकिन सरदार वल्लभ भाई पटेल यदि सख्ती नहीं दिखाते, हिंसा का भय नहीं दिखाते दूसरे शब्दों में कहें तो साम - दाम - दण्ड - भेद का प्रयोग नहीं करते तो क्या पाकिस्तान से प्रेम -भाव रखने वाले निज़ाम भारतवर्ष का भाग होते ?

अब सोचने का विषय यह है कि पाँच सौ पैंसठ रियासतों को एक करना कोई सामान्य कार्य तो था नहीं यदि इतना ही सहज होता तो जम्मू -कश्मीर की समस्या का हल कभी का मिल गया होता, लेकिन अभी तक इसको हम लोग झेल रहे हैं। एक भारत श्रेष्ठ भारत को एक सूत्र में वही व्यक्ति बाँध सकता है जो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी तरह जनपद से लेकर वनवासी क्षेत्र तक चौदह वर्ष नियमित रूप से गतिमान रहा हो अथवा स्वामी विवेकानंद जी की तरह पूरे भारतीय गाँवों को समझ कर शिकागो के धर्म सभा में पाथेय दे पाया हो। लेकिन इतिहास के पन्नों में सरदार वल्लभ भाई पटेल की इस छवि को व्याख्यायित ही नहीं किया गया है।

लाडबाई व झवेर भाई के चौथे पुत्र के रूप में स्वाभिमानी वल्लभ भाई पटेल अपने दम पर लंदन में बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए टिकट मँगवाया था। इस संदर्भ में एक मजेदार किस्सा भी जुड़ा हुआ है । इनके बड़े भ्राता श्री विक्ठ्ठल भाई को भी विदेश में बैरिस्टरी पढ़ने के लिए जाने की प्रगाढ़ इच्छा थी और टिकट में संक्षिप्त नाम दोनों का एक जैसा ही था । सरदार वल्लभ भाई पटेल के स्थान विक्ठ्ठल भाई चले गए। यह तो त्याग की बात हुई। दुबारा पैसा इक्कठ्ठा किए फिर लंदन गए। वहाँ से बैरिस्टरी की डिग्री पूरी करके भारत वापस आए।

कहने का अर्थ यह है कि जितनी 'पब्लिसिटी' बैरिस्टर मोहन दास करमचंद गांधी जी को या कांग्रेस के प्रमुख व देश के धनाढ्य वर्ग से जुड़े मोती लाल नेहरु के सुपुत्र जवाहर लाल नेहरु जी को मिली उतनी सरदार पटेल को नहीं मिल पाई । उन्नतशील राष्ट्र का खाका तैयार करने वाले सरदार पटेल को नेतृत्व की क्षमता होने के बाद भी दोयम दर्जे पर ही रखा गया।

इस व्यवहार के पीछे के कारणों की छान - बीन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रबोध से युक्त निर्णय में लौह पुरुष की दृढ़ता रखने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल से अंग्रेजों को खतरा था, तथा कथित आजाद भारत को संचालित करने के लिए उनको नेहरु जैसे कठपुतली शासक चाहिए था। यही कारण है कि संसदीय मंत्री मण्डल के द्वारा बहुमत मिलने के बाद भी गाँधी जी के आग्रह पर सरदार पटेल को प्रधानमंत्री का दायित्व को त्यागना पड़ा ।

परन्तु, कहा जाता है न कि सूर्य के तेज को बादल कुछ समय तक ही ढ़क सकता है, सर्वदा के लिए नहीं । सन् दो हजार दस में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र दामोदर भाई मोदी सरदार वल्लभ भाई पटेल के एक सौ पैंतीसवें जन्म दिवस पर स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की नींव डालकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किये। लेकिन केन्द्र सरकार का सक्रिय सहयोग न मिलने के कारण यह परियोजना ठंडे बस्ते में चला गया। इसी तरह से 'सरदार सरोवर बांध परियोजना' जो सरदार पटेल का सपना था, तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु जी के कर कमलों से उसका शिल्यान्यास हुआ था, लेकिन कठिनाईयों की कटनी - छँटनी करते हुए त्वरित गति से कार्य करके उद्घाटन करने का सौभाग्य वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को ही मिला ।

एक साक्षात्कार में मोदी जी कहते भी हैं कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मृति में यदि कोई मूर्ति बनेगी तो वह सामान्य कैसे हो सकती है । सरदार सरोवर बांध के सामने विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा जो एकता के प्रतीक के रुप में चरितार्थ होती हो और किसानों के प्रतिनिधि के रुप में गतिमान हो और अखण्ड भारत की पर्वत मालाओं को निहारते हुए दिखती हो ,इस तरह की छवि को मोदी जी अपनी संकल्पना में संजोएँ रखे थे और तत्कालीन अधिकारियों को चुनौती देते हुए कार्य को नियत समय में पूर्ण करने का आदेश दिए ।

अब इसके लिए ऐसे स्थान को चयनित करना था जहाँ पर विश्व की सबसे ऊँची मूर्ति सदियों तक टिकी रहे । अन्ततः समिति व मोदी जी ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के लिए गुजरात के केवड़िया क्षेत्र को चुना । प्रकृति को बिना अधिक क्षति पहुँचाए उन्होंने साधुवेट द्वीप पर एक सौ बयासी मीटर ऊँची पंच धातुओं से निर्मित मूर्ति स्थापित करने के लिए दिशानिर्देश जारी किया।

इस अद्‌वितीय कार्य को सम्पन्न करने के लिए बयालीस महीने का समय दिया गया। विश्वस्तरीय तकनीक तथा होनहार, समर्पित व जमीन से जुड़े सरकारी बाबुओं व अभियंताओं की नियुक्ति की गई।

अधिकारियों की स्वानुभूति ...

चूँकि मोदी जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में घिसकर मुख्य मंत्री से प्रधान मंत्री बने थे तो उन्हें धरातल से जुड़ी छोटी सी छोटी बातों का ध्यान था । उनके सामने अमृतसर मंदिर व अयोध्या के श्रीराम मन्दिर के कारसेवा करने के लिए साधारण जनता का आह्‌वान किया गया था और जिसमें विपरीत परिस्थितियों के बाद भी सामान्य जनता जनार्दन बढ़-चढ़ कर भाग ली थी। वैसे तो 'कारसेवा' के अर्थ से सभी परिचित ही है , लेकिन फिर भी इसकी व्याख्या करना यथेष्ठ होगा । कारसेवा का सामान्य अर्थ अपने कर कमलों से सामूहिक सेवा करना । जालियांवाला बाग हत्या कांड व अमृतसर मन्दिर में ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद पंजाब में पुनर्वासन के लिए सामूहिक रूप से कार्य किया गया था। इसीलिए पंजाबी उच्चारण में कारसेवा शब्द प्रचलित हो गया। आजाद भारत में अयोद्‌धया श्रीराम मन्दिर के निर्माण के लिए हर गाँव से मिट्‌टी व श्रीराम अंकित ईंट लाने का आह्‌वान तो किया गया था और सर्वोच्च न्यायालय के द्‌वारा श्रीराम मन्दिर के निर्माण के लिए आदेश देने के बाद भी नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए प्रत्येक घर से एक रुपये की भागीदारी का आह्‌वान किया गया । जिसका परिणाम यह हुआ कि जनता जनार्दन के द्‌वारा एकत्रित धन राशि के व्याज से ही मन्दिर का निर्माण हो गया। कारसेवा की यह शक्ति होती है ।

इसी परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी जी त्रि-स्तरीय आन्दोलन की उद्‌घोषणा किए।

चूँकि सरदार वल्लभ भाई पटेल को किसानों के हितैषी के रूप में जाना जाता है और बारडोली सत्याग्रह में महिला किसानों के द्‌वारा ही उनको सरदार की और गाँधी जी के द्‌वारा उनकी दृढ़ संकल्पित निर्णय नीति के कारण लौह पुरुष की उपाधि दी गई थी। अतः पूरे भारतवर्ष के किसानों से उनके खेती के अनुपयोगी लौह औजारों में से एक को केवड़िया निर्माण स्थल पर भेजने के लिए आह्‌वान किया गया। और इसका सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुआ । कई हजार टन लोहा इकट्‌ठा हो गया।

दूसरे स्तर पर उन लोगों से आह्‌वान किया गया था जो कि किसान नहीं थे । उनसे स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण कार्य के लिए अपने मातृभूमि की माटी और जल से सहयोग देने के लिए आह्‌वान किया गया । इसका भी सुखद अनुभव मिला कई हजार टन माटी और कई हजार लीटर पानी एकत्रित हो गए।

अब एक ऐसा वर्ग भी था जो नगरों में रहता है उनको भी इस अभियान से जोड़ना था । अतः उनके लिए 'रन फॉर यूनिटी' नामक मैराथन का आयोजन किया गया। बाल -बच्चे, युवा - बुर्जुग, स्त्री-पुरुष सभी एक साथ देश की एकता-अखंडता के लिए दौड़ लगाए ।

अब सोचने की बात यह है कि क्या सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मारक के रुप में मूर्ति बनाने के लिए सरकारी खजाने में पैसा नहीं था क्या ? यदि इसका उत्तर नहीं में है तो फिर क्यों भिक्षावृत्ति करके इसका निर्माण किया गया ? उत्तरस्वरूप यही कहा जा सकता है कि हमारे संविधान में डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर जी ने लिखा है भारतवर्ष में प्रजातंत्र का स्वरूप 'जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए' है। अतः सरदार वल्लभ भाई पटेल की एक सौ बयासी मीटर विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा में अपनत्व का भाव सभी साधारण से साधारण जनता में आएं कि इसके निर्माण प्रक्रिया में हमारी माटी, हमारे जल, हमारे लोहे का भी उपयोग हुआ है। चलो केवड़िया के एकता नगर में स्थित सरदार पटेल जी की प्रतिमा और 'यूनिटी वॉल' को देख आते हैं। यही कारण है कि प्रतिदिन विश्व के कोने-कोने से हजारों पर्यटक यहाँ आते हैं । जब एक बार यहाँ कोई आ जाता है तो बिना कम से कम दो दिन बिताएँ जाता नहीं है ।

मोदी जी सरदार पटेल का सिर्फ स्मारक नहीं बनाएँ हैं बल्कि यहाँ पर पयर्टन के माध्यम से रोजगार देने की व्यवस्था तो किये हैं ।साथ में वैश्विक स्तरीय भारतीय संस्कृति को प्रतिस्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किये। मोदी जी कहते भी हैं कि परिवार के सभी वर्गों के लिए उनकी रुचि की चीज मिलेगी । उदाहरण स्वरुप - 'व्यूइंग गैलरी' सरदार वल्लभ भाई पटेल के हृदय से सरदार बांध को निहारना, चार राज्यों की सीमा के रुप में स्थित पर्वत मालाओं की अनुभूति प्राप्त करना, 'बटरफ्लाई गार्डन', बैली ऑफ फ्लावर (बाईस लाख से अधिक फूलों से युक्त), सात परत में पहाड़ों पर स्थित पन्द्रह सौ से अधिक देशी - विदेशी पशु - पंक्षियों व जीव - जन्तुओं से युक्त केवड़िया जंगल सफारी, सतरह एकड़ में फैला आरोग्य वन, एकता नर्सरी, जापानी वैज्ञानिक मियावाकी के सूत्रों पर निर्मित वोनजाइन वन, रिवर राफ्टिंग, वोटिंग हाऊस, सखी मण्डल के द्वारा परम्परागत भारतीय भोजन जिसे सूपर फूड कहते हैं, प्रकृति की गोद में आधुनिकता की अनुभूति कराने वाला टेंट सिटी का हाउस इत्यादि ।

स्थानीय लोगों को भी विविध क्षेत्रों में रोजगार दिया गया है , उदाहरणार्थ गुलाबी ऑटो रिक्शा में महिला चालकों की नियुक्ति, गाईड के रूप में नव युवक व युवतियों की नियुक्ति, एकता सखी मण्डल के माध्यम से मध्यम उम्र की जनजातीय जीवन शैली में पारंगत बहनों

के लिए व्यवसाय की व्यवस्था, बड़े - बड़े औद्योगिक घरानों को निवेश करने का सुअवसर देना इत्यादि।

विचारणीय प्रश्न यह है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति से इन सभी अत्याधुनिक तकनीक सुख सुविधाओं से युक्त पर्यटन स्थल का क्या लेना देना । मुझे जहाँ तक लगता है कि जिस प्रकार आज के बुजुर्गगण नई पीढ़ियों से उनका समय चाहते हैं, उनके बीच में घिरे रहकर सुरक्षित महसूस करते हैं, ठीक यही भाव सरदार वल्लभ भाई पटेल की आत्मा से युक्त जीवंत प्रतिमा के लिए माननीय प्रधान मंत्री मोदीजी या कहें कि गुजरात के एक लाल ने व्यवस्था स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के माध्यम से दी है।

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के प्रति मोदी जी की संकल्पना में राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक गतिविधियों का संगम हुआ है। गुजरात की एक सौ बयासी विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधि करने वाला भले ही आगामी समय सबसे ऊँची प्रतिमा रहे या ना रहे, लेकिन युगों-युगों तक भूकम्प इत्यादि आपदाओं से मुक्त सांस्कृतिक धरोहर अवश्य रहेगी । जिस प्रकार से लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्व है उसी के अनुपात में हीरा बा के लाल मोदी जी ने सदियों तक के लिए एकता नगर के रुप में व्यवस्था बना दिया है।

संदर्भ सूची

1. गाँधी राजमोहन, सरदार पटेल एक समर्पित जीवन, नवजीवन प्रकाशक अहमदाबाद गुजरात, संस्करण सन् 2012 गुजराती ।
2. मेजर (डॉ.)परशुराम गुप्त विश्वगुरु भारत (कल, आज और कल), प्रतिभा प्रतिष्ठान, चावड़ी बाजार दिल्ली -110006, प्रथम संस्करण -2023पृ. सं .227
3. डोमिनीक लापिएर लैरी कॉलिन्स, अनुवादक तेजपाल सिंह धामा, आज़ादी आधी रात को, हिन्द पॉकेट बुक्स पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रा.लि., प्रथम संस्करण 2009
4. सावरकर विनायक दामोदर छह स्वर्णिम पृष्ठ प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, संस्करण 2024
5. लोक सम्पर्क, प्रत्यक्ष दर्शन व स्वानुभूति

ई संदर्भ

1. https://www.mpinfo.org/Home/Frm_Alekh
2. https://youtu.be/aDrMvZcAEK0?si=3pR8M8IlmaF-aKEf
3. https://youtu.be/o1tqMT4HMo0?si=YB1HLayDM60sbhUY